उपसंहार

बिहारी का काव्य चित्रांकन की दृष्टि से उत्तम काव्य है। उसमे वह सभी गुण मौजूद हैं जो शब्दों के माध्यम से ही एक चित्र की निर्मिति कर देता है। भाव-व्यंजक चेष्टाएँ, क्रियाएँ, भंगिमाएँ सभी चित्र को साकार करने का माध्यम इस काव्य में बने हैं। जिस प्रकार किसी भी साहित्यकार के काव्य को उसका युग और व्यक्तिगत परिवेश बहुत-कुछ प्रभावित करता है। इसके कारण ही उसके व्यक्तित्व को आकर मिलता है, और वही है जो कृतित्व में भी साकार होता है, कुछ ऐसा ही कवि बिहारी का साहित्य भी है। बिहारी मध्यकालीन समय अर्थात् 16वीं-17वीं शताब्दी के मुग़लकालीन समय में सक्रिय रहे। यह वह समय था जिस समय पूरा समाज राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक दृष्टि से तो भारी उथल-पुथल का रहा किन्तु ऐसे समय में भी एकमात्र कला ही अपने उत्कर्ष पर पहुंची। चित्रकला, काव्यकला आदि सभी कलाओं को मुगलशासन में जो संरक्षण प्राप्त हुआ, उससे सभी कलाकार कलाओं के निर्माण की ओर प्रवृत्त हुए, उन्हीं मध्यकालीन कवियों में से एक कवि बिहारी भी रहे जिन्होंने अपने युग विशेष से प्रभावित होकर काव्यकला में चित्रों की माधुरी बिखेरी। उनका काव्यगत विशेष गुण उनके सम्पूर्ण ज्ञान और जीवन के उस अनुभव से उत्पन्न हुआ है जो उन्होंने अपने अनुभव और अध्ययन जगत से अर्जित किया था। 'कल्पना की समाहारशक्ति' के साथ 'भाषा की समासशक्ति' का प्रयोग कर दोहे जैसे छोटे छंद में बिहारी ने अनेक चित्रों को अपने काव्य में साकार कर दिया, इसे ही कुछ मध्यकालीन और आधुनिककालीन चित्रकारों ने कागज व कपड़े पर रंगों के माध्यम से उतारकर चित्रकला की प्रगति का माध्यम बनाया।

चित्रांकन की विविध शैलियाँ भी इस समय में अपने स्थान और परिवेशगत विशेष प्रभाव से अनुप्राणित होकर प्रकाश में आयी। तत्कालीन मुग़ल शैली तथा राजस्थान और

पहाड़ों में प्रचलित मेवाड़, जयपुर, किशनगढ़, काँगड़ा, गुलेर, बसोहली, चम्बा आदि शैलियों ने एक ओर बिहारी को प्रभावित कर काव्य में चित्रों का संयोजन कराया तो दूसरी ओर उनके काव्य में काव्यचित्रों से प्रभावित होकर चित्रकारों ने काव्य में निर्मित उन चित्रों को कागज पर उतारा। इस अर्थ में कहा जाए तो दोनों ने ही एक-दूसरे को गहरा प्रभावित किया, यही कारण है कि बिहारी के काव्य वर्णन में कहीं राजस्थानी शैली के 'अनियारे दीर्घ नेत्र, लहंगा-चोली, रंगसंयोजन में लालिमा' वर्णन का प्रभाव दृष्टिगत होता है तो कहीं मुग़ल शैली के 'महीन रेखाओं और अलंकृत सज्जा पूर्ण' चित्रों का।

जिस चित्रांकन का सामान्य अर्थ कागज या कपड़े पर रंगों के माध्यम से चित्र अंकित करना रहा था उसे बिहारी ने कलम तथा शब्दों के माध्यम से अपने काव्य में साकार कर काव्य और चित्र के प्राचीन सम्बन्ध को उजागर किया। काव्य और चित्र के इस सम्बन्ध को विभिन्न विद्वान मानते अवश्य आये हैं, परन्तु इस दृष्टि से साहित्यकारों की रचनाओं को देखने का प्रयास बहुत ही कम किया गया है। खासकर उन रीतिकालीन कवियों को इस दृष्टि से देखने का प्रयास तो नहीं ही किया गया जिन्होंने कला को पूर्णत: कला के अर्थ में ही लिया।

बिहारी ने शब्द सौष्ठव, अर्थ सौष्ठव एवं रस निष्पत्ति का अप्रतिम प्रयोग कर उनके लिए प्रयुक्त होने वाली उक्ति 'गागर में सागर भरने' को भी अपने काव्य के माध्यम से चरितार्थ कर दिया है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें स्वत: ही अपना आलोक सभी में विकीर्ण कर देती है इसी प्रकार, कवि बिहारी का काव्य भी स्वत: अपने आलोक को फैला रहा है। वह पूरे रीतिकालीन साहित्य का झंडा उठाकर काव्य में चित्रांकन के माध्यम से अगुआ बनकर प्रकाश विकीर्ण कर रहा है।

कविवर बिहारी के जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत तक उनके जीवन तथा काव्य के बहुत कुछ अंश विवादास्पद बने रहें हैं। उनके काव्य को भी अनेकानेक दृष्टियों यथा- प्रेम, ऊहात्मकता, नारी-चित्रण, सामाजिकता आदि में देखने का प्रयास किया गया है, परन्तु उनके काव्य में चित्रांकन की क्षमता को लगभग सभी विद्वानों द्वारा सहमति होते हुए भी इस दृष्टि से बिहारी पर कोई स्वतंत्र विचार कार्य मेरी दृष्टि में अब तक नहीं हो पाया है। आज के समय में काव्य और कला के सम्बन्ध की आवश्यकता बनी हुई है, क्योंकि आज काव्य मात्र काव्य बनता जा रहा है, उसमें भावों के साथ भंगिमाओं, चेष्टाओं तथा क्रियाओं के उस चित्रांकन वर्णन का लोप होता जा रहा है, जिसके महत्त्व और उपस्थिति को होरेस, प्रेमचंद, रामचन्द्र शुक्ल आदि सभी विद्वानों तक ने काव्य में स्वीकार किया है। ऐसी स्थिति में बिहारी के काव्य में चित्रांकन की क्षमता और उसके विविध आयामों को दिखाने के प्रयास से एक ओर उन सभी रीतिकालीन कवियों को एक नयी दृष्टि से देख पाने और उनके महत्त्व को समझ पाने की ओर प्रयास का आधार निर्मित हो सकेगा जिन्हें कई आरोपों के कारण या तो महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता या उनका मात्र श्रृंगारी या प्रकृति वर्णन के आधार पर ही अध्ययन किया जाता है और दूसरा आज के समय में कवि बिहारी के माध्यम से काव्य में चित्र की उपस्थिति की महत्ता और वर्तमान में उसकी उपयोगिता के भी संकेत सूत्र इस शोध में मिल सकते हैं।

अपने इस लघु शोध प्रबंध में मैंने बिहारी के काव्य में वर्णित भाव-भंगिमाओं, क्रियागत चेष्टाओं आदि में अभिव्यक्त चित्रांकन और उसके विविध आयामों की खोज का प्रयास किया है। इसी क्रम में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूँ कि बिहारी के काव्य में चित्रांकन का स्वरुप विविध पक्षीय है। स्थिर और गतिशील दोनों ही प्रकार के चित्रों का संगम बिहारी के काव्य में हुआ है। बिहारी की यह चित्रांकन क्षमता गतिशील चित्रों में एक अलबम की तरह उभरकर आती है जो कि उनके स्थिर चित्रों में उतनी साकार नहीं हो पाई है। मेरे शोध प्रबंध में

मैंने उनके जिन गतिशील चित्रों पर बने स्थिर रंग चित्रों को उजागर किया है उनमें समय तथा सीमा की बाध्यता तो अवश्य होनी ही थी, परन्तु फिर भी एक ही चित्र में विविध दृश्यों के द्वारा बिहारी के काव्य के एक-एक सम्पूर्ण चित्र को आकार देने का स्तुत्य प्रयास भी कई चित्रकारों ने किया है। बिहारी के काव्य के आधार पर मेवाड़, गुलेर, काँगड़ा, जयपुर आदि शैलियों में जो चित्र निर्मित हुए हैं उनसे भी बिहारी के काव्य में उस चित्रांकन पक्ष का प्रमाण मिलता है जो कवि बिहारी को चित्रकार बिहारी बना देता है। बिहारी के इन काव्यचित्रों के पढ़ते ही गंभीर पाठक के मानस में वह आकर ले लेता है।

अतः शब्द और कलम की ताकत से 'कल्पना की समाहारशक्ति और भाषा की समासशक्ति' के माध्यम से बिहारी ने काव्य में चित्रांकन का वह कार्य कर दिखाया है जो चित्रकार चित्र पर रंगों तथा तूलिका के माध्यम से करता है। कविवर बिहारी द्वारा काव्य में चित्रांकन का यह अक्षुण्ण प्रयास भविष्य के लिए स्मरणीय तथा वर्तमान समय के काव्य के लिए मार्गदर्शक है।